भोरमदेव मंदिर में अंकित नायिका मूर्तियों का विश्लेषण (भरतनाट्यम के विशेष संदर्भ में)

प्रो.डॉ.ऋचा ठाकुर
(प्राध्यापक नृत्य)
शास.डॉ.वा.वा.पाटणकर कन्या स्ना.महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शबीना बेगम
(शोधार्थी)
प्रा.भा.इति.संस्कृति एवं पुरातत्त्व
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में पुरातात्विक साक्ष्यों की उपादेयता एक स्वीकृत और सर्वमान्य तथ्य है। जहां से भी पुरातात्विक सामग्रियां प्राप्त होती है, इतिहास एवं संस्कृति के अध्येताओं, जिज्ञासुओं और अनुसंधानकर्ताओं के लिए सहज आकर्षण का केन्द्र हो जाती है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र के अंतर्गत सिरपुर, राजिम, शिवरीनारायण, भोरमदेव आदि स्थान पुरातात्त्विक दृष्टि से विशेष महत्व रखते हैं। भोरमदेव मंदिर पर्वत श्रेणियों के बीच घाटी में शिव को समर्पित मंदिर है। मंदिर की बाह्य भित्तियों पर आकर्षक हाथी, नटराज, गणेश, नायक–नायिका मूर्तियों के अतिरिक्त मिथुन मूर्तियां बनी हुई है। प्रतिवर्ष यहां भोरमदेव राष्ट्रीय महोत्सव मनाया जाता है। छत्तीसगढ़ का यह भू–भाग पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यन्त सम्पन्न है। जनजातियों के नृत्य–संगीत यहां के आकर्षण हैं, साथ ही शासकों की विशाल परंपरा और समृद्धि उनके मंदिरों के स्थापत्य में दिखती है। भोरमदेव अपनी अनूठी कला के लिए विश्व विख्यात है। यदि भारतीय कला के विविध रूपों का विश्लेषण करें तो हम पायेंगें कि इनमें दो मुख्य तत्वों का समन्वय है– एक नैतिक और दूसरा सौन्दर्यपरक। भोरमदेव में इन दोनों तत्वों का समन्वय है। भोरमदेव के मंदिर में उत्कीर्ण नायिका मूर्तियों की सौन्दर्यपरक विशेषताओं का शास्त्रीय नृत्यों के आधार पर अध्ययन निश्चित तौर से अध्येताओं के लिए लाभप्रद होगा। मंदिर में उत्कीर्ण नायिका मूर्तियों की मुद्राओं का भरतनाट्यम के संदर्भ में अध्ययन शोध का विषय है। इन मूर्तियों का अलंकरण विशेष दृष्टव्य है। जिनका वर्णन अग्रलिखित है–

नायिका मूर्तियाँ

नायिका मूर्तियाँ मूर्तिकला की प्राण मानी जाती है। देश के हर हिस्से में ये मूर्तियाँ दृष्टव्य है। इन्हें अप्सरा मूर्तियों से जोड़कर देखा जा सकता है। वैदिक काल से ही नायिकाओं का अंकन देखने को मिलता है। 'अथर्ववेद' में गंधर्वों के साथ, 'शतपथ ब्राह्मण' में हंसिनी के रूप में, रामायण, महाभारत आदि में इनका उल्लेख है। भारतीय मंदिरों की बाह्य भित्तियों में इन मूर्तियों का अंकन बहुतायत में मिलता है। भोरमदेव के मंदिर में भी इन मूर्तियों का अंकन प्राप्त होता है। इन नायिकाओं को नायिका भेदों के अंतर्गत हम मुग्धा नायिका, पद्मिनी नायिका के स्वरूप में मान सकते हैं।

स्वाभाविक सौन्दर्य का अंकन दर्शनीय है। इसमें नायिकायें अपने विभिन्न मनोहर रूपों में नारी सौन्दर्य के विभिन्न स्वरूपों में अंकित की गई है। सौन्दर्य के विभिन्न स्वरूपों का अंकन इस मंदिर की शोभा को दुगुना कर देते हैं। मंदिर की बाह्य भित्तियों में असंख्य नायिकायें भाव प्रवणता के साथ प्रतिस्थापित है। शास्त्रीय नृत्य शैलियों का श्रृंगारिक पक्ष भी इन्हीं नायिकाओं के सौन्दर्य से प्रस्फुटित होता है। जिस प्रकार भरतनाट्यम नृत्य शैली में नायिका–भेदों का प्रदर्शन किया जाता है उसी प्रकार मंदिर की भित्तियों में भी विभिन्न नायिकाओं का मनोहारी शिल्प अंकित है। इन्हें भरतमुनि के नाट्यशास्त्र की देन भी हम मान सकते हैं। यहाँ नायिकाओं को श्रृंगार प्रसाधन–रत, सद्यःस्नाता, घुंघरू बांधती हुई, ढोलक, बांसुरी बजाती हुई, एकाकी, युगल, सामूहिक नृत्य करती हुई, अंकित किया गया है। जिनका वर्णन निम्न है–

दर्पण विभ्रम नायिका

मंदिर के उत्तरी पश्चिमी कोण की बाह्य भित्ति पर यह नायिका सहज आकर्षण का केन्द्र है। इस नायिका की आंखें मत्स्यकार हैं। बायें हाथ में दर्पण की सहायता से केश सज्जा व जूड़े को संवारती दिखाई पड़ रही है। इस नायिका को

"मध्यक्षामंसमायुक्ताः पीनोरूपधनं स्तनाः" कह सकते है।

इस नायिका को रूपगर्विता नायिका की श्रेणी में रखा जा सकता है। इसके बायें हाथ में दर्पण है और उसकी सहायता से वह अपने सौन्दर्य को निहार रही है। कटि त्रिभंग मुद्रा में है। आलीढ़ स्थानक मुद्रा में खड़ी हुई है। भरतनाट्यम में इस श्रृंगारिक मुद्रा का प्रयोग होता है।

सद्यःस्नाता

यह मूर्ति दक्षिण–पश्चिम कोण पर मंदिर की बाह्य भित्ति पर सुशोभित है। यह ऐसे प्रतीत हो रही है मानों अभी–अभी स्नान कर आई हो और अपने केश सुखा रही हो। इसके नेत्र अवनत (झुके हुये) हैं एवं वह अपने बायें हाथ से केशराशि सहला रही है। वहीं नीचे हंस ऊपर की ओर निहारते हुये अंकित है। दायां हाथ डोला मुद्रा में वस्त्र पकड़े हुए है। कटि त्रिभंगी एवं आलीढ़ स्थानक में नायिका खड़ी हुई है।

भरतनाट्यम में जब नायिका नड्य (चलन) करती है तो इस भंगिमा का प्रदर्शन होता है।

अलसा नायिका

यह मूर्ति पश्चिम कोण पर बाह्य भाग में स्थित है। इसके दोनों हाथ ऊपर अंगड़ाई की मुद्रा में उठे हुये हैं। शरीर का अंकन तिर्यक है। कटि प्रदेश लोच लिए हुये हैं। अलंकरण की दृष्टि से कंठहार, स्तनहार, पायजेब एवं कंगन स्पष्ट दृष्टव्य है।

इस नायिका की मूर्ति खजुराहो की अलसा नायिका से बहुत साम्य रखती है। नेत्र निमीलित (आधे मुंदे हुये) एवं ग्रीवा तिर्यक एवं सिर परावृत मुद्रा में है। कटि त्रिभंगी एवं बायाँ पैर जमीन पर एवं दायां घुटने से मुड़ा होकर ऊपर उठा हुआ है। इसे संगीत रत्नाकर में वर्णित देसी स्थानक "एक जानुगत" से साम्य रखता हुआ मान सकते हैं। चूंकि इस मूर्ति में गतिशीलता का भाव दिख रहा है। इसलिए इसे आकाशचारी का एक स्वरूप भी माना जा सकता हे। इसके दोनों हाथ कर्कट मुद्रा में अंगड़ाई लेते हुये प्रतीत हो रहे हैं। नायिका के श्रृंगारिक भाव का ऐसा प्रयोग भरतनाट्यम में किया जाता है।

घुंघरू बांधती हुई नायिका (नर्तकी)

तत्कालीन समय में भी नृत्य–संगीत को उच्च स्थान प्राप्त था। जिस प्रकार ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए अप्सरायें नृत्य किया करती थी, उसी प्रकार मंदिर में स्थापित भगवान की मूर्तियों के लिए नर्तकियों, देवदासियों का नर्तन कराया जाता रहा है। संभवतः इसी कारण मंदिरों की भित्तियों में नायिकाओं के शिल्प अंकित किये जाते रहे हैं। भोरमदेव मंदिर की दक्षिण दिशा की बाह्य भित्ति पर एक नर्तकी को अपने बायें पैर में घुंघरू बांधते हुये दिखाया गया है। उसका दायां पैर घुटने से किंचित मुड़ा हुआ है जिसे भरतनाट्यम के अनुसार अरमण्डी (आधा बैठा) माना जा सकता है। उसे पैर में घुंघरू स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं, मानो वह अपनी प्रस्तुति के लिए तैयार हो रही है। घुंघरू नृत्य के लिए अपरिहार्य माना जाता है। नायिका नर्तकी भावप्रणव मुद्रा में है।

एकाकी नृत्य दृश्य में नायिका

भोरमदेव मंदिर की भित्तियों में एकाकी नायिका (नर्तकी) के अंकन की बहुलता है। भरत के नाट्यशास्त्र के चौथे अध्याय में नृत्य भंगिमाओं के 108 करण गिनाये गये हैं। नृत्य में हस्त तथा पादों से मिलकर हलन–चलन करने को "करण" कहते है। अधिकांश करणों का अंकन चिदम्बरम मंदिर के गोपुर में हुआ है, किन्तु भोरमदेव मंदिर में भी कुछ करणों का अंकन दिखाई देता है। जो निम्न प्रकार से है–

- एक मूर्ति में नायिका के दोनों हाथ कटि में एवं पैर अरमण्डी की स्थिति में दिखाई दे रहे हैं। भरतनाट्यम में प्रथम मुद्रा अरमण्डी है, किन्तु उसमें दोनों पैरों के घुटने बाहर की ओर फैले होते हैं एवं पैर "वर्धमान स्थानक" की स्थिति में

होते हैं। उक्त मूर्ति में घुटने आपस में जुड़े हुये और पैर एड़ियों से बाहर की ओर निकले हुये हैं–इस भरतनाट्यम की आरंभिक मुद्रा से मिलता हुआ मान सकते हैं। उक्त भंगिमा की तुलना नाट्यशास्त्र में वर्णित करण क्रमांक 40 छिन्न से की जा सकती है।

- अन्य मूर्ति का बायां हाथ वामकर्ण के पास उर्ध्वस्थिति में है एवं दूसरा हाथ कटि के पास है। पैरों की अवस्था में बायां पैर का पंजा बाहर की ओर एवं एड़ी अंदर की ओर घुटना मुड़ी हुई अवस्था में है, दायें पैर की एड़ी उठी हुई अवस्था में है। संगीत सूर्योदय के देसी स्थानक "पार्ष्णिपार्श्वगत" से इसे मिलता हुआ मान सकते हैं।

  नाट्यशास्त्र के 28वें करण अर्धमत्तल्लि से भी इसे प्रेरित माना जा सकता है। जिसमें पैर स्खलितापसृत होते है। बायां हाथ रेचित और दायां हाथ कमर पर होता है।

- एक नर्तकी की मूर्ति खड़ी हुई अवस्था में जिसका दायां हाथ सिर के ऊपर ऊर्ध्व स्थिति में एवं बायां हाथ डोल मुद्रा में है। पैरों की स्थिति "गतागत" स्थानक मुद्रा में है। नायिका के भाव से प्रतीत हो रहा है मानो वह किसी की प्रतीक्षा में है। भरतनाट्यम शैली में इन नायिका भेदों पर अनेक प्रस्तुतियाँ की जाती है।

- एक नायिका मूर्ति वैष्णव स्थानक मुद्रा में खड़ी हुई है। संगीत रत्नाकर में वर्णित देसी स्थानक (स्वास्तिक) से भी इसकी तुलना की जा सकती है। दृष्टिसम है कटि हल्की त्रिभंग एवं दायां हाथ वरद मुद्रा में है। बायां हाथ डोल मुद्रा में है। नायिका की वेशभूषा भरतनाट्यम नृत्य में पहनी जानी वाली वेशभूषा में मिलती हुई लग रही है।

इसी प्रकार नायिकाओं की नृत्य करती हुई अनेक मूर्तियाँ समान मुद्रा में अंकित है। नाट्यशास्त्र में वर्णित करण क्रमांक 7 स्वास्तिक रचित क्रमांक 12, अर्धरेचित क्रमांक 22 अर्धस्वास्तिक क्रमांक 35 भुजंगत्रस्तरेचित 40, भुजंगचित आदि के वर्णन से मिलती हुई इन मुद्राओं को भरतनाट्यम शैली में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

वादन एवं नृत्यरत नायिका

भोरमदेव मंदिर की बाह्य भित्ति में कई स्थानों पर स्त्री पुरूष दोनों को नृत्य करते हुये दिखाया गया है। प्रस्तुत दृश्य में नर्तक युगल की मुद्रायें भरतनाट्यम के अड़वुओं के समीप है। इन दृश्यों के हस्त विन्यास में गतिशीलता परिलक्षित हो रही है। एक दृश्य में नायिका आयत स्थानक में तो नायक समपाद से मिलते जुलते पद विन्यास में अंकित है। नायक के हाथों में मृदंग एवं नर्तकी के हस्त विन्यास गतिमान अवस्था में है। स्पष्ट है कि मृदंग का प्रयोग भरतनाट्यम वादन में किया जाता है। इनका अंकन वारंगल (पालमपेठ) के रामप्पा देव मंदिर में अंकित विभिन्न नृत्य मुद्राओं से साम्य रखता है। हम कह सकते हैं कि इन नृत्य मुद्राओं का स्त्रोत दक्षिण के मंदिरों से रहा है और भरतनाट्यम मूलतः दक्षिणात्य परंपरा का निर्वहन करता रहा है। अतः इन मंदिरों में अंकित मूर्तियों की मुद्राओं पर इस नृत्य का स्पष्ट प्रभाव है।

भोरमदेव मंदिर की उत्तर दिशा स्थित बाह्य भित्ति में भी युगल नृत्य की मूर्तियाँ अंकित है। एक दृश्य में दोनों तरफ वादक है, उनके मध्य दो नृत्यांगनाएं नृत्य कर रही है। दोनों की नृत्य मुद्रायें अलग–अलग है। उनकी वेणी हवा में लहरा रही है अर्थात् गतिशीलता का भाव है। एक वादक मृदंग की थाप दे रहा है वहीं दूसरा बंशी वादन कर रहा है। अनेक स्थानों पर नायिका को बंशी वादन करते हुये दिखाया गया है, तो कहीं वह मृदंग बजाती हुई अंकित है।

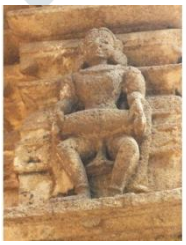

वंशी बजाती नायिका

वंशी बजाती नायिका के पैर अरमंडी की अवस्था में स्वास्तिक मुद्रा में है, नेत्र निमीलित एवं हाथ बांसुरी बजाती हुई अवस्था में है।

अन्य दृश्यांकन

कुछ दृश्यों में स्त्री सैनिकों को ढाल और खड्ग लिए हुये बताया गया है। इनमें स्वाभाविकता और गतिशीलता है। कहीं–कहीं उनके दोनों हाथों में कटार लिए हुये अंकित किया गया है। एक दृश्य में तीन धनुष के साथ भी अंकन दृष्टव्य है।

इन मूर्तियों में लयात्मकता एवं गतिशीलता का अत्यंत सुंदर अंकन हुआ है, जो यह बताता है कि तत्कालीन शिल्पकार मूर्तिकला के साथ–साथ नृत्यशास्त्र का भी गहन अध्ययन करते थे। संक्षेप में कहा जा सकता है कि भोरमदेव के मंदिर में अंकित नायिका मूर्तियाँ सौन्दर्य भावना एवं सामाजिक क्रियाकलापों का जीवंत दर्शन कराती है। चूंकि इन मूर्तियों का सृजन दक्षिण के अनेक मंदिरों से प्रभावित दिखता है अतः उसके नृत्य दृश्यों में भी दक्षिण का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है जहां प्रमुख नृत्य शैली भरतनाट्यम सर्वकालिक चरमोत्कर्ष पर रही है।

भोरमदेव की कला, दक्षिण कोसल में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। निश्चित तौर पर युग विशेष की बदलती मान्यताओं एवं परिस्थितियों के प्रभाव द्वारा परंपरा तथा आस्था को प्रश्रय देने वाला यह स्थान दक्षिण कोसल की ऐश्वर्यशाली नगरी रहा होगा। इसकी कला पर दक्षिण का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। मूर्तियों की मुद्राओं के साथ ही उनका वस्त्राभूषण और अलंकरण भी भरतनाट्यम में धारण की जाने वाली वेशभूषा से मिलता है। पुरूष और स्त्री मूर्तियों में ऊपरी वस्त्रों का अंकन हुआ है। स्त्री आकृति को उत्तरीय वस्त्र के रूप में दुपट्टा धारण किये हुये अंकित किया गया है। कहीं–कहीं कुचबंधका प्रयोग भी हुआ है। शरीर के अधोभाग में धोतीनुमा साड़ी बांधी हुई प्रदर्शित है, कुछ स्त्रियों को घुटनों तक साड़ी बांधी हुई अंकित किया गया है। ये दोनों की प्रकार की साड़ी भरतनाट्मयम के प्रदर्शन के समय पहने लाने वाली वेशभूषा से समानता रखती है।

किसी भी नृत्य की प्रस्तुति उसके आंगिकाभिनय से परिलक्षित होती है। मंदिरों में अंकित मूर्तियों के अध्ययन से प्राचीन ग्रंथ नाट्यशास्त्र, अभिनय दर्पण में वर्णित अंग भेदों का विस्तार से ज्ञान होता है। भोरमदेव मंदिर की मूर्तियां भी नृत्यशास्त्र के नियमों का पालन करती हुई दिखाई देती है।

भरतनाट्यम शैली में हस्त मुद्राओं का महत्वपूर्ण स्थान है। मंदिर में अंकित मूर्तियों में संयुक्त और असंयुक्त दोनों मुद्राओं का बहुतायत प्रयोग मिलता है। मंदिरों में अंकित नायिका मूर्तियों में मुख्यतः पताक हस्त, हंसास्य हस्त, अलपद्म हस्त, डोल हस्त, अंजलि हस्त, मुष्टि हस्त का अंकन दिखाई देता है। कहीं–कहीं भग्न अवस्था होने से हस्त मुद्रायें स्पष्ट नहीं है। मंदिर की भित्तियों में अंकित नायिका मूर्तियों की मुद्राओं में करण एवं अंगहार के भेद भी दृष्टव्य है। इन मूर्तियों में करण भेदों में से छिन्न भेद, अर्धमत्ततिल भेद, स्वास्तिक रचित, एलकाक्रीड़ित, ग्रधावलीनक हरिणप्लुत, भुंजंगस्त्रतरचित, अर्धस्वस्तिक, भुजंगाचित आदि करणों का प्रयोग हुआ है। ये करण भेद भरतनाट्यम नृत्य शैली में प्रयोग में लाये जाते हैं।

अतः सार रूप में यह कहा जा सकता है कि इन मूर्तियों के निर्माताओं ने नृत्य शास्त्र का सूक्ष्म अध्ययन किया होगा। केवल परंपरा पर आश्रित न होकर उन्होंने नए प्रयोगों और विचारो को भी अंकन में स्थान दिया। भोरमदेव की नायिका मूर्तियों के अनुशीलन से यह कहा जा सकता है कि निःसंदेह ये मूर्तियाँ विश्व की धरोहर है जो अपने पीछे एक लंबा इतिहास, विशिष्ट संस्कृति और आस्था को समेटे हुये है। इन मूर्तियों को हम उसकी संस्कृति की आत्मकथा कह सकते हैं। संक्षेप में यह कला अपने अस्तित्व को सशक्त ढंग से प्रस्तुत करते हुये दक्षिण कोसल की सोमवंशी, नलवंशी तथा कल्चुरि कलाओं की तरह प्रशंसनीय है। चूंकि यह कला नागवंशी राजाओं के काल में संवर्धित हुई इसलिए इस कला को नागवंशी कला के नाम से भी संबोधित किया जा सकता है। भोरमदेव मंदिर के यह नृत्य शिल्प, नृत्य की शास्त्रीय परंपरा का बोधक होने के साथ ही शाश्वत सौन्दर्य की पुष्टि के लिए ही अभीष्ट अभिनव प्रयोगों में उदारता का समर्थन है। इसका अध्ययन भरतनाट्यम नृत्य के विद्यार्थियों एवं नृत्य मनीषियों को आंतरिक पारितोष प्रदान करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशन	वर्ष
1	प्रमुख आधार ग्रन्थ नाट्यशास्त्र	भरतमुनि	परिमल प्रकाशन	1981
2	भारतीय नाट्य परंपरा एवं अभिनय दर्पण	नंदिकेश्वर / वाचश्पति गैरोला	चौखंबा संस्कृत संस्थान, वाराणसी	
3.	संगीत रत्नाकर	सुब्रमण्यिम शास्त्री	अडयार लायब्रेरी	
4.	शिल्परत्नकोश	स्थापक नीरांजन महापात्र	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र दिल्ली एवं मोतीलाल बनारसी दास प्राय.लि. दिल्ली	1994
5.	नर्तन निर्णय भाग–1	श्री पुण्डरीक विट्ठल	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र दिल्ली एवं मोतीलाल बनारसी दास प्राय.लि. दिल्ली	1994
6.	शिल्पप्रकाश	श्री रामचंद्र महापात्र	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र दिल्ली एवं मोतीलाल बनारसी दास प्राय.लि. दिल्ली	2005
7.	भरतनाट्यम हाऊ टू	जयलक्ष्मी ईश्वर	बी.आर. रिदम्स, दिल्ली	2010
8.	अशोकमल्ल विरचित नृत्ताध्याय	वाचस्पति गैरोला	चौखंबा संस्कृत प्रतिष्ठान	1985
9.	भरतनाट्यम भाग–1	लक्ष्मीनारायण गर्ग	संगीत कार्यालय हाथरस	2001 प्रथम
10.	भोरमदेव	डॉ. सीताराम शर्मा	म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल	1989 प्रथम

****